

पाठ 7

मन की पीड़ा

इस पाठ से हम सीखेंगे—

- भारत की गरीबी के बारे में महात्मा गांधी के विचार।
- उपयोगी चीजों का दुरुपयोग रोकना।
- दो वर्णों के मेल से बने वर्णों [क्ष] [त्र] [ज्ञ] की जानकारी।
- वर्ण के नीचे लगने वाले हलन्त [ँ] की जानकारी।
- पूर्ण विराम [।], अर्द्ध विराम [,], अल्प विराम [;], प्रश्नवाचक चिह्न [?], विस्मय सूचक चिह्न [!], योजक चिह्न [—], निर्देशक चिह्न [—], उद्धरण चिह्न [“”] एवं [“”] तथा कोष्ठक [()] की जानकारी।

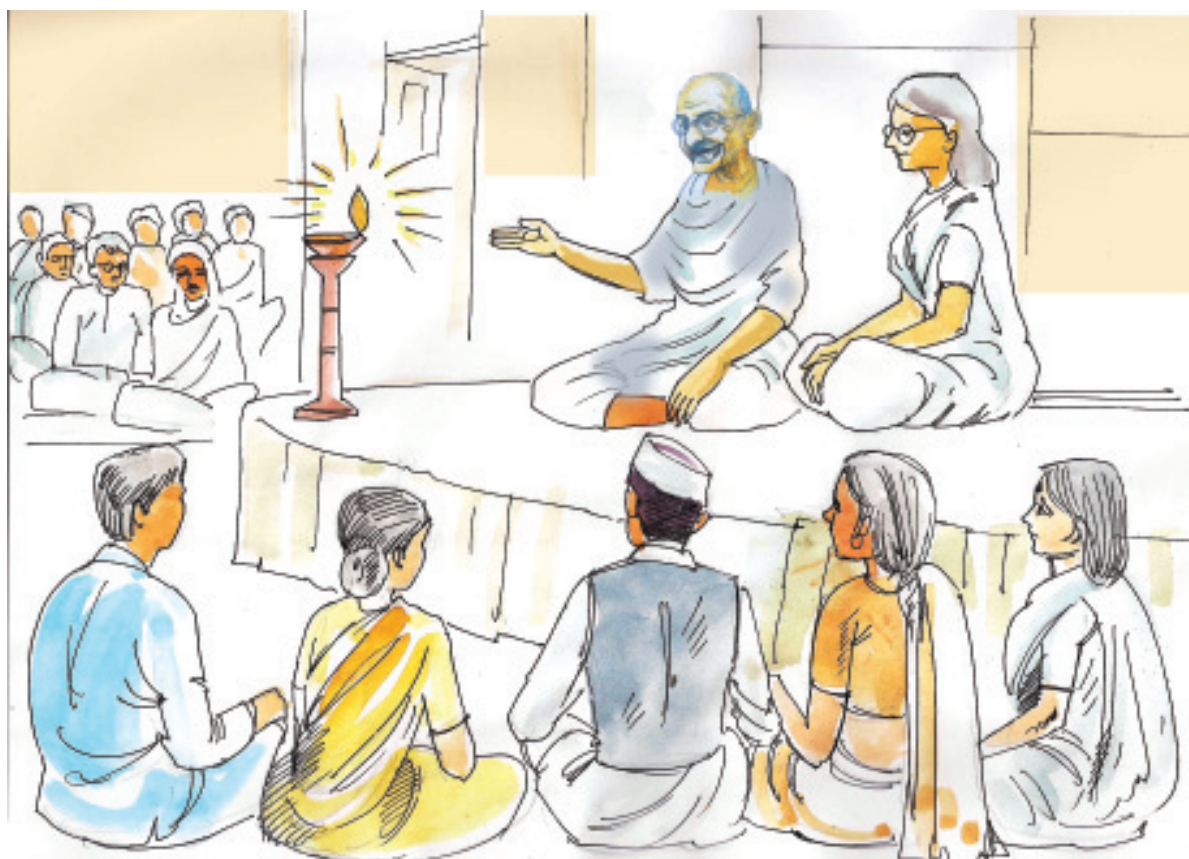
पाठ

बात सेवाग्राम की है। गांधी जी का जन्मदिन मनाया जा रहा था। प्रार्थना के बाद गाँधी जी का प्रवचन होना था। जन्मदिन के कारण आज बहुत लोग आए थे।

गांधी जी समय पर आ गए। सामने घी का दीया जल रहा था। दीये को देखकर गांधी जी चौंक गए। यह नई बात थी। वे एकटक कई क्षणों तक दीये को देखते रहे।

प्रार्थना शुरू हुई। गांधी जी उसमें लीन हो गए। प्रार्थना में श्रद्धा, भक्ति और ज्ञान की त्रिवेणी बह रही थी।

प्रार्थना के बाद गांधी जी का प्रवचन होना था। हर बार गांधी जी नई-नई बातें बताते थे। सब लोग अधीर थे कि आज गांधी जी क्या कहेंगे? सहसा गांधी जी ने पूछा—“यह दीया कौन लाया है?”



सब चुप थे। कस्तूरबा पास ही बैठी थीं। वे बोलीं—“यह दीया मैं लाई हूँ।”

गांधी जी ने पूछा—“कहाँ से लाई हो?”

बा ने उत्तर दिया—“गाँव से लाई हूँ। आज आपका जन्मदिन है न!”

गांधी जी थोड़ी देर के लिए मौन और अवाक् हो गए। उनके चेहरे पर चिंता की लकीरें खिंच गईं। वे गंभीर स्वर में बोले— “हे राम! आज यह सबसे बुरा काम हुआ

है। बा ने घी का दीया नहीं जलाया, मेरा दिल जलाया है। आज मेरा जन्मदिन है। इसीलिए दीया जलाया गया है। आस-पास के गाँवों में गरीब लोग रहते हैं। वे दो वक्त की रोटी कठिनाई से जुटा पाते हैं। यह मैं रोज़ देखता हूँ कि वे बेचारे ज्वार-बाजरे की सूखी रोटी खाते हैं। रोटी पर चुपड़ने के लिए तेल तक नहीं मिलता। मेरे आश्रम में आज घी का दीया जल रहा है। यह कितने आश्चर्य की बात है! हे भगवन्! मुझे क्षमा करना।”

वे आगे बोले— “जो चीज़ गरीबों को नसीब न हो, उसे हम कैसे बरबाद कर सकते हैं?”

गांधी जी के प्रवचन में उनके मन की पीड़ा झलक उठी थी।

इनका मतलब जानिए—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
सेवाग्राम	= गुजरात का एक स्थान, जहाँ गांधी जी का आश्रम है।	मौन	= चुप, शान्त
प्रवचन	= उपदेश, अच्छे विचार	चिंता की लकीरें	= परेशान होना, फ़िक्र करना
त्रिवेणी	= तीन का समूह	खिंचना	
श्रद्धा	= सम्मान, आदर	गंभीर	= गहरा, शांत
ज्ञान	= जानकारी	दिल	= तकलीफ़ देना,
क्षण	= थोड़ी देर	जलाना	कष्ट देना
लीन	= रम जाना	वक्त	= समय
अधीर	= बेचैन	कठिनाई	= मुश्किल
सहसा	= अचानक	आश्चर्य	= अचंभा
		क्षमा	= माफ़
		नसीब	= किस्मत

आइए यह भी जानें—

क्ष, त्र, ज्ञ वर्णों की पहचान और इनका प्रयोग:

इस पाठ में आपने नीचे दिए शब्द पढ़े हैं—

क्षमा, त्रिवेणी, ज्ञान

- इनमें आए वर्ण क्ष, त्र और ज्ञ तीनों ही दो-दो अक्षरों के योग से बने हैं।

जैसे— • 'क्ष'— क और श के मेल से बना है।

- 'त्र'— त और र के मेल से बना है। त्र, त्र का ही रूप है।

- 'ज्ञ'— ज और ज के मेल से बना है।

इस तरह वर्णमाला में तीन संयुक्त अक्षर होते हैं— क्ष त्र ज्ञ।

क्ष त्र ज्ञ वाले और भी शब्द देखिए—

कक्षा, त्रिदेव, विज्ञान, रक्षा, रात्रि, यज्ञ

हलन्त ँ चिह्न की पहचान और इसका प्रयोग:

जैसे— अवाक्, अहम्, भगवन्

ऊपर लिखे शब्दों में आए तीनों अक्षरों क्, म्, न् को ध्यान से देखिए।

इन अक्षरों के नीचे एक तिरछी रेखा (ँ) लगी है।

यह तिरछी रेखा ही हलन्त चिह्न है। इसे लगाने के बाद कोई भी वर्ण आधा हो जाता है।

अतः यहाँ, क्, म्, न् आधे अक्षर हैं।

अब हलन्त ँ चिह्न वाले कुछ और शब्दों को पढ़कर समझिए:

श्रीमन्, वाग्देवी, बुढ़ा, गढ़ा, विद्वान्, चमत्कार, श्रद्धा, सद्विचार

विराम आदि चिह्नों की पहचान और इनके प्रयोग में अंतर:

नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िए:

1. बात सेवाग्राम की है।
 2. प्रार्थना में श्रद्धा, भक्ति और ज्ञान की त्रिवेणी बह रही थी।
 3. गांधी जी ने पूछा—“यह दीया कौन लाया है?”
 4. हे राम! आज यह सबसे बुरा काम हुआ है।
- वाक्य एक के अंत में एक खड़ी पाई (।) लगाई गई है। यह पाई पूर्ण विराम है। पूर्ण विराम वाक्य पूरा होने के बाद लगाया जाता है, जैसे— बात सेवाग्राम की है। गांधीजी का जन्म दिन मनाया जा रहा था।
 - वाक्य दो में श्रद्धा और भक्ति के बीच में एक चिह्न , लगा है। यह अर्द्ध विराम है। पूर्ण विराम से थोड़ा कम रुकने के लिए अर्द्ध विराम लगाया जाता है। अर्द्ध विराम दो शब्दों या दो छोटे वाक्यों के बीच में लगता है, जैसे— उपदेश, अच्छे विचार।

बा ने घी का दीया नहीं जलाया, मेरा दिल जलाया है।

- वाक्य तीन में ‘गांधी जी ने पूछा’ के बाद एक लम्बी लकीर (—) है। यह निर्देशक चिह्न (डैश) है। इस चिह्न का प्रयोग निर्देश देने के लिए या उदाहरण आदि देने के लिए किया जाता है, जैसे— गांधी जी ने पूछा— “यह दीया कहाँ से लाई हो?”

निर्देश देने और उदाहरण देने के लिए — चिह्न लगाया जाता है। इसे निर्देशक चिह्न कहते हैं।

उद्धरण चिह्नों की पहचान एवं इनका प्रयोग:

- इसी वाक्य में दो चिह्न “ ” लगे हैं। ये उद्धरण चिह्न हैं। जब किसी की कही हुई या लिखी हुई बात को जैसे का तैसा लिखना होता है, तो इन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, जैसे— गांधी जी ने पूछा— “यह दीया कौन लाया?” ये दोहरे उद्धरण चिह्न हैं। कहीं-कहीं इकहरे चिह्न ‘ ’ भी प्रयोग किए जाते हैं। ये किसी पुस्तक के नाम या व्यक्ति के उपनाम में लगाए जाते हैं, जैसे— रामधारी सिंह ‘दिनकर’ और सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’। या ‘सलाम दिल्ली’ पुस्तक में बहुत अच्छी कहानियाँ हैं।

किसी भी लिखी हुई या कही हुई बात को ज्यों-का-त्यों लिखने पर उसके दोनों ओर “ ” चिह्न लगाते हैं। इन्हें उद्धरण चिह्न कहते हैं। किसी पुस्तक के नाम या किसी व्यक्ति के उपनाम के दोनों तरफ इकहरे उद्धरण चिह्न ‘ ’ का प्रयोग किया जाता है।

प्रश्नसूचक चिह्न की पहचान एवं इसका प्रयोग:

- इसी वाक्य के अंत में एक चिह्न ? और लगा है। यह प्रश्नसूचक चिह्न है। कौन, कहाँ, क्या, कब, कैसे आदि प्रश्न वाले वाक्यों के अंत में यह चिह्न लगता है। जैसे— “आज गांधी जी क्या कहेंगे?”

जब किसी वाक्य में प्रश्न पूछा जाता है तो उस वाक्य के अंत में ? चिह्न लगता है। इसे प्रश्नसूचक चिह्न कहते हैं।

विस्मयादि बोधक चिह्न की पहचान और इसका प्रयोग:

वाक्य चार में हे राम के अंत में एक चिह्न **!** लगा है। यह संबोधन का या विस्मय का चिह्न है। इसे किसी को संबोधित करते समय लगाते हैं या तब लगाते हैं, जब किसी बात पर आश्चर्य या विस्मय होता है, जैसे— “हे भगवन्! मुझे क्षमा करना।” “अरे! वह भी ऐसा निकला!”

कभी-कभी वाक्य में या तो संबोधन होता है या आश्चर्य, विस्मय, दुख, प्रसन्नता आदि मन के भाव। जिस चिह्न के द्वारा इन्हें व्यक्त किया जाता है, उसे विस्मयादि बोधक चिह्न (!) कहते हैं।

अभ्यास

1. नीचे **क्ष** **त्र** और **ज्ञ** से एक-एक शब्द बनाया गया है। इन वर्णों से दो-दो और शब्द बनाइए:

क्ष	क्षमा		
त्र	त्रिशूल		
ज्ञ	विज्ञान		

2. **क्ष** **त्र** या **ज्ञ** जोड़कर नीचे लिखे शब्द पूरे करिए:

जैसे- विज्ञान	त्रिय	य.....	पवि.....
.....मा	ानी	मा.....ा	

3. नीचे लिखे वाक्यों के शब्दों में उचित स्थान पर हलन्त चिह्न लगाइए, फिर उस शब्द को खाली जगह में लिखिए:

जैसे- विद्यालय में वाक्कला प्रतियोगिता चल रही थी। “वाक्कला”

- भगवन! कभी हमारे गाँव में भी तो आइए।
- गांधी जी गीता के महान विद्वान थे।
- अचानक एक लड़का गडढे में गिर गया।

4. नीचे लिखे वाक्यों में उचित स्थान पर उपयुक्त चिह्न लगाइए। चिह्न को चौखटे में भी लिखिए:

वाक्य	चिह्न
जैसे- राम बाज़ार गया।	।
● मैं कल दिल्ली गया वहाँ से मैं फल मिठाई कपड़े लाया।	
● तुम कब से बीमार हो	
● अरे तुम्हारा कुत्ता मर गया	
● गीता में कहा गया है कार्य पर ध्यान दो फल पर नहीं	
● रामधारी सिंह दिनकर महान कवि थे	
● गांधी जी ने कहा किसी चीज़ का दुरुपयोग मत करो।	

5. दी गई जगह में चिह्न बनाइए:

● प्रश्नसूचक चिह्न		● निर्देशक चिह्न	
● अर्द्ध विराम		● कोष्ठक	
● अल्प विराम		● उद्धरण चिह्न	
● पूर्ण विराम		● योजक चिह्न	
● विस्मय सूचक चिह्न			

6. बाएँ से दाएँ तथा ऊपर से नीचे शब्दों को पढ़िए और लिखिए:

आ	ज्ञा		
	न	क्ष	त्र
			रु
			त

.....

.....

.....

.....

7. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

(क) गांधी जी की सभा में भीड़ क्यों थी?

.....

(ख) गांधी जी किस वस्तु को देखकर चौंक गए?

.....

(ग) घी के दीये को देखकर गांधी जी ने क्या पूछा?

.....

(घ) गांधी जी ने घी के दीये का विरोध क्यों किया?

.....

(ङ) गांधी जी के प्रवचन में क्या झलक रहा था?

.....

आइए, करके देखें—

- गांधी जी के जीवन से जुड़ी ऐसी ही और कहानियाँ इकट्ठी करके लिखिए।

अब यह जानिए

- अंग्रेजों के शासन में हमारा देश बहुत गरीब था। लोगों को दो वक्त का भोजन बहुत कठिनाई से मिलता था। इस कारण गांधी जी बहुत परेशान रहते थे। वे गरीबी को दूर करने के उपाय भी बताते रहते थे। उनका कहना था कि हमें सादगी से रहना चाहिए। घरेलू उद्योग-धंधे अपनाकर अपनी आमदनी बढ़ानी चाहिए। गांधी जी फ़िजूलखर्ची के सख्त खिलाफ़ थे।
- गांधी जी मानते थे कि हर चीज़ उपयोगी है। हजारों लोगों के काम की चीज़ को बरबाद न करें। इसीलिए गांधी जी ने घी के दीये का विरोध किया था। घी खाने की चीज़ है, जलाने की नहीं। गांधी जी यह भी मानते थे कि लोग पानी, बिजली, अनाज, लकड़ी आदि की भी बरबादी करते हैं। हमें हर हालत में इस दुरुपयोग को रोकना चाहिए।